गदे के यज्ञ की विधि

विषय–सूची

क्रम सं.	विषय	पृष्ठ सं.
	चालीसे के यज्ञ पर बैठने की विधि	1
	I–गदे के यज्ञ पर बैठने की विधि	4 से 32
1.	चलो चलिये सजन महाबीर जी दे पास	5
2.	सब गौरी नन्द गणेश	6
3.	महाबीर आप पवाया जी	7
4.	श्री हनुमान चालीसा	8
5.	संकट मोचन	10
6.	पंच कवित्त	11
7.	नज़र आवें नाथ तूं ही तूं ही	12
8.	नी सरस्वती तूं कंचन हो जा	13
9.	ओ हीरा है अनमोल, चलो रघुवर प्यारे कोल	14
10.	आओ साजन जी प्यारा है मेरा	15
11.	जो गल बात करनी पहले कर लो सजनों	17
12.	रंग ओ इलाही आया	17
13.	संगता चार चुफेर श्री राम जी दियां	17
14.	गाना है बड़ा महान	17
15.	पहले पूजां महाबीर जी दे चरणां नूं	18
16.	जित्थे तुसां शान्ति जानो, ओथे तुसां शक्ति पछानो	18
17.	सरस्वती कंचन होवे, नाम ते ध्यान होवे	19
18.	यज्ञ के पिछले सात दिन हवन की विधि	21
19.	सातवें दिन का बड़ा हवन	21
20	नी मैं धो के पीवां हनुमान जी दे चरण	22
21.	आरती–सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की	24
22.	आरती श्री साजन जी की	26
23.	गदे दी होई ए पूजा	27

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

यज्ञ के चालीस दिनों में निम्नलिखित नीतियों की पालना करनी है:

चालीसे का यज्ञ जो महाव्रत है, हर वर्ष 3 पोष से आरम्भ होकर 13 माघ को समाप्त होता है। इस महाव्रत पर केवल नामी सजनों ने विचार के साथ, प्रेम और शान्तिपूर्वक बैठना है। इसलिए सब सजनों को चालीसा अच्छी तरह से याद होना चाहिये। इस महाव्रत पर सब सजनों ने केवल सात दिन ब्रह्मचर्य व्रत रखकर चालीसे पर बैठना है। चालीसा का पाठ गुलानारी रंग का दुपट्टा सिर पर करके सुबह 6 बजे से 10 बजे के अन्दर या फिर दोपहर 2 बजे से रात 9 बजे के अन्दर ही करना है। सब सजनों ने खबरदार रहना है कि उनका तीन वक्त का पाठ बुद्धवार और वीरवार के बोर्डों का पढ़ना, मंगलवार का हवन, तीनों यज्ञों के हवन, पौने दो महीने का शाम को 5 से 5.30 बजे तक या 5.30 से 6 बजे तक मन्त्र चलाना आदि कभी खण्डित न हों। सजनों ने रोना झुखना नहीं और निन्दया, क्रोध, झूठ, चोरी से हमेशा बचकर रहना है। महाव्रत के चालीस दिनों में सजनों ने शोक वाली जगह पर नहीं जाना है और न ही रोना है। अगर कोई ऐसा कर बैठे तो उसने आखिरी सात दिन चालीसा पर नहीं बैठना और हुक्म पर ठहरना है। सत्संग पर आ सकते हैं।

चालीस दिन विधि अनुसार कीर्तन करना है। विधि करने वाले पहले से निश्चित किये हुए सात कंचन (जिनका गृहस्थाश्रम ठीक हो) सजनों ने गुलानारी रंग के दुपट्टे अवश्य प्रतिदिन करने हैं। चालीसे पर उन्होंने भी सात दिन सब सजनों की तरह बैठना है। केवल इन्हीं सात सजनों ने ही विछाई, ग्रन्थ उठाना, तिलक लगाना, आरती, ढोलक, बाजा, अमृत, प्रशाद आदि की नीतियाँ करनी हैं। इन सात सजनों में से अगर कोई सजन किसी दिन बहुत मजबूरी कारणवश सभा में नहीं पहुंच सकता तो उसके स्थान पर किसी दूसरे सजन ने विधि नहीं करनी। इसलिए यह सात सजन प्रतिदिन सत्संग में पहुँचना निश्चित करें। बहुत मजबूरी (शारीरिक बीमारी) में अगर सत्संग में न पहुँच सकें तो विधि घर पर ज़रूर करें। सात दिन से अधिक चोरी छुपी चालीसा पर कोई सजन न बैठे। चालीसा पर सब सजनों ने गुलानारी रंग का दुपट्टा करके बैठना है। इन सात सजनों में से यदि कोई सजन त्रुटि कर बैठे तो

वह सात सजनों में नहीं बैठ सकता।

नीचे लिखी नीतियों का भी बर्ताव करना है:–

1. जिन पति–पत्नी दोनों सजनों ने नाम लिया हुआ है वह एक दूसरे से पूछकर इस महाव्रत पर बैठेंगे।

2. यदि केवल स्त्री सजन ने नाम लिया हुआ है तो वह अपने पति सजन से पूछकर और इसी तरह से अगर केवल पति सजन ने नाम लिया हुआ है तो वह अपनी पत्नी सजन से पूछकर ही इस महाव्रत पर बैठेंगे।

3. जिस नामी लड़के या लड़की सजन का विवाह नहीं हुआ वह भी चालीसा पर बैठ सकते हैं। उनमें से किसी ने नाम लेने के पश्चात यदि कोई गलती कर ली हो और वह आगे से कंचन रहने का वचन देवें तो वह भी चालीसा पर बैठ सकते हैं। इस तरह दूसरे नामी सजन जिसका गाना पीटने या कुरस्ते पड़ने के कारण उतर गया है, वह सजन अब ठीक चल रहे हों तो वह चालीसा पर बैठ सकते हैं।

4. यदि पति–पत्नी में से किसी एक सजन का चालीसा किसी कारणवश खण्डित हो जाता है तो दूसरा सजन जो ठीक चल रहा हो वह चालीसा पर बैठ सकता है। इस तरह सात विधि करने वाले सजनों में से किसी पति या पत्नी का चालीसा किसी कारणवश खण्डित हो जाता है तो दूसरा कंचन सजन जो ठीक चल रहा है वह सर्गुण में बैठ सकता है।

5. जो सजन तीन वक्त का पाठ पूरा नहीं करते या बुद्धवार और वीरवार के बोर्ड नहीं पढ़ते या और नीतियाँ पूरी नहीं करते, वह सजन चालीसा पर तभी बैठ सकते हैं अगर वह अब ठीक चलने का वचन दें।

6. जो सजन नाम लेने के पश्चात भी मीट, अण्डा, शराब का सेवन कर रहे हैं वह चालीसा पर नहीं बैठ सकते।

7. सात सजन बाहर हवन पर और सात सजन अन्दर मन्दिर के चारों तरफ, वही बैठेंगे जो आद से शुद्ध हों और जिनका गृहस्थाश्रम ठीक हो। जो सात सजन निर्गुण में बैठें केवल वही मन्दिर (जहाँ गाने पूजा के लिए रखे होते हैं) पर फूल बरसायेंगे। हवन वाले सजन झोलियों में फूल बरसायेंगे।

चंवर करने वाला कंचन सजन इन सात सजनों से अलग होगा।

8. जिन सजनों ने नाम लिया हुआ है और नया गाना पहली बार पहनना है वह सजन पहले कच्चा (लाल रंग के धागे का) गाना आखिरी सात दिनों में दायें हाथ में बांधेंगे और फिर यज्ञ वाले दिन पूजा हुआ गाना पहनेंगे। हर स्कूल ने कम से कम सात तांबे के गाने मन्दिर में रखकर पूजने हैं। सोने के सभी नये गाने मन्दिर में रखने है। फिर पूजे हुए गानों में से एक–एक गाना इच्छुक सजनों को पहनाना है। गाना पहनने के नियम और नीति सब सजनों को अच्छी तरह बता देनी है ताकि सजन उनकी पालना कर सकें। उनको यह बताना है कि यह गाना हमारी 'रख' है और हमारा 'सिरताज' है, इसको सुबह उठकर और रात को सोते समय नमस्कार करना है। गाने को केवल दही में नमक डालकर धोना है और किसी चीज़ से नहीं धोना। एक बार गाना डालने के पश्चात् उसे पहने बगैर कुछ खाना–पीना नहीं। इसलिए हर एक सजन अपने पास दो गाने रखे। एक हर समय पहना हुआ और दूसरा घर में रखा हुआ। जिन सजनों ने सोने का गाना पहना हुआ है, वह सजन एक तांबे का गाना घर पर रखें। जब कभी पहना हुआ गाना खण्डित हो जाये तो उसे उतार कर झट दूसरा गाना पहन लें। किसी भी सजन ने खण्डित गाना जेबों में रख कर या धागे से बांधकर या बकसुओं के साथ लगाकर प्रयोग नहीं करना। सब गानों का एक ही नमूना हो।

9. गाना पहनने के पश्चात जो सजन मीट, अण्डा या शराब का प्रयोग करें या पत्नीव्रत धर्म या पतिव्रत धर्म का उल्लंघन कर बैठें तो वह चुपचाप अपना गाना उतार कर सभा में दे देवें। नीति के विरुद्ध किसी सजन ने गाना नहीं पहनना। इसी में ही सब सजनों की भलाई है।

10. गदे के यज्ञ के 40 दिनों के महाव्रत के दौरान, जहां ग्रन्थ रखा हो वहाँ उस मन्दिर में गुलानारी साज से सजावट करनी है।

गदे के यज्ञ की विधि

1. **प्रार्थना** (मन में करनी है)

सजन श्री शहनशाह महाबीर जी की प्रार्थना

धन मेरे सजन श्री शहनशाह हनुमान जी महाराज सब तों श्रेष्ठ, सब तों विद्वान, सब तों गुणवान, सब तों बलवान, सब तों धनवान, सब तों बुद्धिमान, सारी दुनियां विचों ज्ञानवान सजन श्री शहनशाह हनुमान जी महाराज दोनों भुजा पसार कर धरूँ चरणों पर सीस, मेरी कोट–कोट प्रणाम।

श्री रघुनाथ जी की प्रार्थना

आद पुरुष, निरंकार, ज्योति स्वरूप, पारब्रह्म परमेश्वर, भक्त वत्सल श्री रघुनाथ जी महाराज, दोनों भुजा पसार कर धरूँ चरणों पर सीस, मेरी कोट–कोट प्रणाम।

चरण वन्दना

चरण शरण सजन श्री शहनशाह हनुमान जी दी वन्दना करां बारम्बार, सजन दास सीस धरे चरणां उत्ते सजन त्रिभुवनपति रघुनाथ।

सजन सियापति रामचन्द्र जी की जय।
सजन पवनसुत हनुमान जी की जय।
सजन उमापति महादेव जी की जय।
बोल सजन श्री कृष्ण बलदेव जी की जय।
बोल शहनशाहे आलम महाराजाधिराज सतवस्तु के वाली श्री साजन जी की जय।

2. **पांच जयकारे** (बोलकर)

बोल सजन श्री शहनशाह महाबीर बजरंगबली जी की जय।
बोल सजन दयालु श्री रामचन्द्र महाराज जी की जय।
बोल सजन श्री कृष्ण बलदेव जी की जय।
बोल सजन बाबे गुरूनानक देव जी की जय।
बोल शहनशाहे आलम महाराजधिराज सतवस्तु के वाली श्री साजन जी की जय।

3. रामायण और ग्रन्थ का उठाना

एक सजन सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, दूसरा सजन रामायण, तीसरा सजन कीर्तनों वाली पुस्तकें उठायेगा और चंवर झुलायेगा, साथ ही यह कीर्तन बोलना है:

(i) चलो चलिये सजन महाबीर जी दे पास, दासियां रल चलिये–2
पूरन हनुमान जी मिल गए, पूरन हनुमान जी मिल गए।
जिन्हां मिलाया रघुनाथ, दासियां रल चलिये ।।
चलो चलिये सजन महाबीर जी दे पास, दासियां रल चलिये–2

(ii) सब कुछ महाराज नूं सौंप के, धन–दौलत वी सौंप के।
चरणां विच लइये आनन्द, दासियां रल चलिये ।।
चलो चलिये सजन महाबीर जी दे पास, दासियां रल चलिये–2

(iii) चित्त चरणां विच लायके, श्वास–श्वास नाम ध्याय के।
गूढ़ा चढ़ सिवे रंग, दासियां रल चलिये ।।
चलो चलिये सजन महाबीर जी दे पास, दासियां रल चलिये–2

(iv) झगड़े सारे मिटाय के, डर भौ सारे हटाय के।
तुसी भजन करो आनन्द, दासियां रल चलिये ।।
चलो चलिये सजन महाबीर जी दे पास, दासियां रल चलिये–2

(v) शास्त्र नूं विचार के, सम सन्तोष नूं धार के।
मिल गए परमानन्द, दासियां रल चलिये ।।
चलो चलिये सजन महाबीर जी दे पास, दासियां रल चलिये–2

(vi) सजन हनुमान जी दीन दयाल ने, दासियां ते कृपाल ने।
बलधारी हैन बक्षंद, दासियां रल चलिये ।।
चलो चलिये सजन महाबीर जी दे पास, दासियां रल चलिये–2

4. पांच जयकारे–बोलकर

बोल सजन श्री शहनशाह महाबीर बजरंगबली जी की जय।
बोल सजन दयालु श्री रामचन्द्र महाराज जी की जय।
बोल सजन श्री कृष्ण बलदेव जी की जय।
बोल सजन बाबे गुरूनानक देव जी की जय।
बोल शहनशाहे आलम महाराजधिराज सतवस्तु के वाली श्री साजन जी की जय।

5. जय सीताराम, जय सीताराम, जय सीताराम बोल ।
जय राधेश्याम, जय राधेश्याम, जय राधेश्याम बोल ।
रघुपति राघव राजा राम, पतित पावन सीताराम ।
जिनके सेवक हैं हनुमान, उनको मेरी है प्रणाम ।
जिनके स्वामी हैं राजाराम, उनको मेरी है प्रणाम ।

6. **रामायण और ग्रन्थ का प्रकाश**

7. **प्रार्थना और चरण–शरण** (मन में करनी है)

8. **साडा है सजन राम, राम है कुल जहान** (7 बार)

9. **एक सजन तिलक लगाना शुरू करेगा।**

10. **यह शब्द उच्चारण करने हैं :–**

(i) सब गौरी नन्द गणेश, प्रथम प्रणाम करो।

(ii) शीश गजानन मुकुट विराजे,
सुन्दर बदन सुरेश, प्रथम प्रणाम करो।
सब गौरी नन्द गणेश..................

(iii) देव मुनि सब पूजें जिनको,
नारद शारद शेष प्रथम प्रणाम करो।
सब गौरी नन्द गणेश..................

(iv) माता जिनकी पार्वती हैं,
जिनके पिता महेश, प्रथम प्रणाम करो।
सब गौरी नन्द गणेश..................

(v) विघ्न हरण मंगल के दाता,
भक्त जनों के हेत, प्रथम प्रणाम करो।
सब गौरी नन्द गणेश..................

(vi) कृपा जिनकी सकल जगत पर,
मेरे तीन लोक के ईश, प्रथम प्रणाम करो।
सब गौरी नन्द गणेश..................

(vii) दोनों हाथ जोड़ शरण प्रभु तुहाडी,
मेरे काटो नाथ क्लेश, प्रथम प्रणाम करो।
सब गौरी नन्द गणेश....................

11. भजन

(i) महाबीर आप पवाया जी, ए गदा सोहणा लगदा ।
दासी दे दिल नूं भाया जी, ए गदा सोहणा लगदा ।।

(ii) मैं नहीं कोई नज़र न आवे –2
गदा महाबीर जी पाया जी, ए गदा सोहणा लगदा ।
महाबीर आप पवाया जी.................

(iii) ए गदा हीरियां जड़त जड़ाया –2
सब दे दिल नूं भाया जी, ए गदा सोहणा लगदा ।
महाबीर आप पवाया जी.................

(iv) इस गदा ने सारी उमर चरणां विच गुजारी –2
सियाराम मिलाया जी, ए गदा सोहणा लगदा ।
महाबीर आप पवाया जी.................

(v) इस गदा ने तीनों ताप मिटाये –2
कोई झगड़ा न आया जी, ए गदा सोहणा लगदा ।
महाबीर आप पवाया जी.................

(vi) ए गदा राम जी दे प्यारे ने पाया –2
रघुनाथ जी दिल विच हर्षाया जी, ए गदा सोहणा लगदा ।
महाबीर आप पवाया जी.................

(vii) इस गदा ने देवतियाँ दी आस पुजाई –2
राक्षसां नूं मार मुकाया जी, ए गदा सोहणा लगदा ।
महाबीर आप पवाया जी.................

(viii) जिस दासी ने ए गदा जो पाया –2
यम ओन्हां दे निकट नहीं आया,
मौत दा भय हटाया जी, ए गदा सोहणा लगदा।
महाबीर आप पवाया जी................

12. प्रार्थना और चरण शरण

13. श्री हनुमान चालीसा

श्री गुरु चरण सरोज रज, निज मन मुकुर सुधार।
वरणों रघुवर विमल यश, जो दायक फल चार।।
बुद्धिहीन तनु जानि के, सिमरों पवन कुमार।
बल, बुद्धि, विद्या देहु मोहे, हरयो क्लेश विकार।।

जय हनुमान ज्ञान गुण सागर	।	जय कपीश तिहुँ लोक उजागर	।।
रामदूत अतुलित बल धामा	।	अंजनि पुत्र पवन सुत नामा	।।
महाबीर विक्रम बजरंगी	।	कुमति निवार सुमति के संगी	।।
कंचन वरण विराज सुवेषा	।	कानन कुंडल कुंचित केशा	।।
हाथ वज्र और ध्वजा विराजे	।	कांधे मूंज जनेऊ साजे	।।
शंकर सुवन केसरी नन्दन	।	तेज प्रताप महा जग वन्दन	।।
विद्यावान गुणि अति चातुर	।	राम काज करिबे को आतुर	।।
प्रभु चरित्र सुनिवे को रसिया	।	राम लषण सीता मन बसिया	।।
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा	।	विकट रूप धरि लंका जरावा	।।
भीम रूप धरि असुर संहारे	।	रामचन्द्र जी के काज संवारे	।।
लाय संजीवन लषण जिवाये	।	श्री रघुवीर हर्ष उर लाये	।।
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई	।	तुम मम प्रिय भरत सम भाई	।।
सहस बदन तुमरो यश गावें	।	अस कहि श्रीपति कंठ लगावें	।।
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीशा	।	नारद शारद सहित अहीशा	।।
यम कुबेर दिग्पाल जहां ते	।	कवि कोविद कहि सकें कहाँ ते	।।
तुम उपकार सुग्रीवहि कीन्हां	।	राम मिलाय राजपद दीन्हां	।।

तुमरो मंत्र विभीषण माना	।	लंकेश्वर भये सब जग जाना	।।
युग सहस्त्र योजन पर भानु	।	लील्यो ताहि मधुर फल जानु	।।
प्रभु मुद्रिका मेल मुख माहिं	।	जलधि लांघि गये अचरज नाहिं	।।
दुर्गम काज जगत के जेते	।	सुगम अनुग्रह तुमरे तेते	।।
राम द्वारे तुम रखवारे	।	होत न आज्ञा बिन पैसारे	।।
सब सुख लहै तुम्हारी शरना	।	तुम रक्षक काहु को डरना	।।
अपना तेज सम्हारो आपे	।	तीनों लोक हांकते कापें	।।
भूत पिशाच निकट नहीं आवे	।	महाबीर जब नाम सुनावे	।।
नाशे रोग हरै सब पीरा	।	जपत निरन्तर हनुमत बीरा	।।
संकट से हनुमान छुड़ावे	।	मन कर्म वचन ध्यान जो लावे	।।
सब पर राम तपस्वी राजा	।	तिनके काज सकल तुम साजा	।।
और मनोरथ जो कोई लावे	।	तासु अमित जीवन फल पावे	।।
चारों युग प्रताप तुम्हारा	।	है प्रसिद्ध जगत उजियारा	।।
साधु सन्त के तुम रखवारे	।	असुर निकन्दन राम दुलारे	।।
अष्ट सिद्धि नव निधि के दाता	।	अस वर दीन्ह जानकी माता	।।
राम रसायन तुमरे पासा	।	सदा रहो रघुपति के दासा	।।
तुमरे भजन राम को पावे	।	जन्म जन्म के दुःख बिसरावे	।।
अन्तकाल रघुवर पुर जाई	।	जहाँ जन्म हरि भक्त कहाई	।।
और देवता चित्त न धरई	।	हनुमत सेव सर्व सुख करई	।।
संकट हरे मिटे सब पीरा	।	जो सिमरे हनुमत बलबीरा	।।
जय जय जय हनुमान गुसाईं	।	कृपा करो गुरुदेव की नाईं	।।
यह शत बार पाठ कर जोई	।	छूटहिं बन्दि महा सुख होई	।।
जो यह पढ़े हनुमान चालीसा	।	होय सिद्ध साखी गौरीशा	।।
तुलसीदास सदा हरि चेरा	।	कीजे नाथ हृदय मम डेरा	।।

दोहा – पवन तनय संकट हरन, मंगल मूरती रूप।
राम लषण सीता सहित , हृदय बसौ सुर भूप।

14. संकट मोचन

(i) बाल समय रवि भक्ष लियो, तब तीनहुं लोक भयो अंधियारो ।
ताहि सों त्रास भई जग को, यह संकट काहु सो जात न टारो ।
देवन आन करी बिनती, तब छाड़ि दियो रवि कष्ट निवारो ।
को नहीं जानत है जग में, कपि संकट मोचन नाम तिहारो ।

(ii) बाली की त्रास कपीस बसे, गिरि जात महाप्रभु पंथ निहारो ।
चौंक महामुनि श्राप दियो, तब चाहिये कौन विचार विचारो ।
कै द्विज रूप ले आय महाप्रभु, सो तुम दास के शोक निवारो ।
को नहीं जानत है जग में, कपि संकट मोचन नाम तिहारो ।

(iii) अंगद के संग लेन गये, सिया खोज कपीश यह बैन उचारो।
जीवत न बचिहों हम सो, जो बिना सुधि लाये इहां पग धारो।
हेरि थके तट सिन्धु सबै, तब लाय सिया सुधि प्राण उबारो ।
को नहीं जानत है जग में, कपि संकट मोचन नाम तिहारो ।

(iv) रावण त्रास दई सिय को, सब राक्षसि सो कहि शोक निवारो।
ताहि समय हनुमान महाप्रभु, जाय महा रजनिश्चर मारो ।
चाहत सीय अशोक सों आग, सो दे प्रभु मुद्रिका शोक निवारो ।
को नहीं जानत है जग में, कपि संकट मोचन नाम तिहारो ।

(v) बाण लग्यो उर लक्ष्मण के, तब प्राण तज्यो सुत रावण मारो ।
लै गृह वैद्य सुषेन समेत, तबै गिरि द्रोण सो वीर उपारो ।
आन संजीवनि हाथ दई, तब लक्ष्मण के तुम प्राण उबारो ।
को नहीं जानत है जग में, कपि संकट मोचन नाम तिहारो ।

(vi) रावण युद्ध अजान कियो, तब नाग की फांस सबै सिर डारो ।
श्री रघुनाथ समेत सबै दल, मोह भयो यह संकट भारो ।
आन खगेश तबै हनुमान, जो बन्धन काट सो त्रास निवारो ।
को नहीं जानत है जग में, कपि संकट मोचन नाम तिहारो ।

(vii) बन्धु समेत जबै अहिरावण, ले रघुनाथ पताल सिधारो ।

देवहि पूजहि भली विधि सों, बलि देवो सबै मिल मंत्र विचारो ।
जाय सहाय भये तबहिं, अहिरावण सैन्य समेत संहारो ।
को नहीं जानत है जग में, कपि संकट मोचन नाम तिहारो ।

(viii) काज किये बड़ देवन के, तुम वीर महाप्रभु देखि विचारो ।
कौन सो संकट मोर गरीब को, जो तुम सों नहीं जात है टारो ।
वेग हरो हनुमान महाप्रभु, जो कुछ संकट होय हमारो ।
को नहीं जानत हैं जग में, कपि संकट मोचन नाम तिहारो ।

दोहा :– लाल देह लाली लसे, अर धर लाल लंगूर।
वज्र देह दानव दलन, जय जय जय कपि शूर।
यह अष्टक हनुमान को, विरचित तुलसीदास।
गंगादास जो प्रेम से पढ़े होय दुःख नास।

15. पंच कवित्त

(i) बालि की त्रास कुसंग सुसंगत, व्याकुल देह दशा बिसराई ।
बैठ विचार करै गिरि ऊपर, आवत ना कछु चित्त उपाई ।
मन में अनुमान कियो रघुनायक, भेंट भई सो हरि दो चिताई ।
ए विध मोर क्लेश हरो, हनुमान तुम्हें सियाराम दुहाई ।

(ii) आन सुषैन पवन समेत, ग्रह ग्रह द्रोण दले बल जाई ।
वायु में पथ चले अति आतुर, पुष्पक यहाँ नहिं तै चलाई ।
औषध ले प्रबोध से तब, वैद्य जी कीन्हों सहाय उपाई ।
ए विध मोर क्लेश हरो, हनुमान तुम्हें सियाराम दुहाई ।

(iii) रामहि लै अहिरावण गयो, बन्धु दोऊ दे बल जाई ।
वानर हाल बेहाल फिरै, कहि जात नहीं कछु व्याकुलताई।
ताही को अन्त कियो क्षण में, भगवन्त आन कपीश मिलाई ।
ए विध मोर क्लेश हरो, हनुमान तुम्हें सियाराम दुहाई ।

(iv) लांघि पयोध प्रबोध सिया, भेंट विभीषण कीन्हों दी चिताई ।
फेर पवन सुत आन कही, सम सुता सुदेह कुशल सुखदाई।
रावण को मद मर्दन कर, पुनः कीनो भरत सुखी समुदाई ।
ए विध मोर क्लेश हरो, हनुमान तुम्हें सियाराम दुहाई ।

(v) रोग वियोग केल डारन के, तब भाल अंक मयंक गफेते ।
पुत्र प्रपौत्र सखा परिवार सुखी सब सागर संत बधेते ।
जो जन जेते चले पग में, अपराध करे गजराज बड़ेते ।
दारिद्र दुःख मिटे तुलसी, हनुमान जी के पंच कवित्त पढ़ेते।
ए विध मोर क्लेश हरो, हनुमान तुम्हें सियाराम दुहाई ।

16. चालीसा का केवल पहला दोहा बोलना हैः–

श्री गुरु चरण सरोज रज, निज मन मुकुर सुधार।
वरणों रघुवर विमल यश, जो दायक फल चार।।
बुद्धिहीन तनु जानि के, सिमरों पवन कुमार।
बल बुद्धि विद्या देहु मोहे, हरयो क्लेश विकार।।

17. चरण पकड़ने

पकड़ां महाबीर दे चरण, लगे राम लगन –2
होवां प्रेम मग्न, लगे राम लगन –2
महाबीर जी दे चरण, साडे मन नूं हरण –2
राहवां चरणां विच मग्न, लगे राम लगन –2

18. यह भजन सात बार बोलना है

(i) नज़र आवें नाथ, तुहीं तुहीं ओ इक, तुहीं तुहीं हो इक, तुहीं तुहीं ।
तुहीं तुहीं ओ तुहीं , तुहीं तुहीं ओ तुहीं, तुहीं तुहीं ओ तुहीं, तुहीं तुहीं ।
तुहीं तुहीं ओ तुहीं , तुहीं तुहीं ओ तुहीं, तुहीं तुहीं ओ तुहीं, तुहीं तुहीं ।।

(ii) लाज रखे नाथ, तुहीं तुहीं ओ इक, तुहीं तुहीं ओ इक, तुहीं तुहीं ।
तुहीं तुहीं ओ तुहीं, तुहीं तुहीं ओ तुहीं, तुहीं तुहीं ओ तुहीं, तुहीं तुहीं ।।

(iii) भिक्षा पावें नाथ, तुहीं तुहीं ओ इक, तुहीं तुहीं ओ इक, तुहीं तुहीं ।
तुहीं तुहीं ओ तुहीं, तुहीं तुहीं ओ तुहीं, तुहीं तुहीं ओ तुहीं, तुहीं तुहीं ।।

(iv) आस पुजावें नाथ, तुहीं तुहीं ओ इक, तुहीं तुहीं ओ इक, तुहीं तुहीं ।
तुहीं तुहीं ओ तुहीं, तुहीं तुहीं ओ तुहीं, तुहीं तुहीं ओ तुहीं, तुहीं तुहीं ।।

19. यह सात बार बोलना है

तांगा रक्खियां तांगा रक्खियां, महाबीर रघुनाथ तेरियां ।
आशा लाइयां आशा लाइयां, ना करो नाथ देरियां ।।

20. कीर्तन नं0 1

(i) नी सरस्वती तूं कंचन हो जा,
कूड़ा आड़ा कढ हीरे लाल जवाहर दिखा।। –2
नी सरस्वती तूं कंचन हो जा ।।

(ii) बखेड़े छड बगीची ला, –2
नी सरस्वती सोहणा मन्दिर सजा ।। –2
हुन तूं ऐसी सुगन्धि दिखा।
नी सरस्वती तूं कंचन हो जा ।।

(iii) चारे पासे दरवाजे ला, –2
नाले फुलवाड़ी वी ला ।।–2
रघुवर लंघन ते फुल बरसा।
नी सरस्वती तू कंचन हो जा ।।

(iv) जड़ाऊ ए सिंहासन, हीरे मोतियां नाल सजा, । –2
सोहणां सच्चाई दा हार बना ।। –2
रघुवर जी दे गल विच पा ।
नी सरस्वती तूं कंचन हो जा ।।

(v) नी सरस्वती सोलह सिंगार तूं पा । –2
धूप दीप और तिलक लगा ।। –2
हुन तूं ऐसा साज दिखां ।
नी सरस्वती तू कंचन हो जा ।।

vi) चरणां विच लच्छे गल बैजन्ती माला, । –2
सिर ते ताज कमर सजे दुशाला ।।–2
हुण तूं ऊपर चंवर झुला।
नी सरस्वती तू कंचन हो जा ।।

दोहा– सिंहासन दा तूं मालिक भयों, चानणां कुल संसार।
बेअन्त है तेरी लीला, बेअन्त तूं सिरजनहार।।
सियापति रामचन्द्र की जय,
पवन सुत हनुमान की जय,
उमापति महादेव की जय,
जयकार, जयकार, जयकार, जयकार सदा जयकार।।

दोहा– कौन करे तेरी आरती, कौन है करने वाला।
अनाहद ता झनकार जो आवे, ज्योति दा उजियाला।।
सियापति रामचन्द्र की जय,
पवन सुत हनुमान की जय,
उमापति महादेव की जय,
जयकार, जयकार, जयकार, जयकार सदा जयकार।।

21. कीर्तन नं० 2

(हनुमान जी के मुख के शब्द)
श्री साजन जी को कह रहे हैं

(i) ओ हीरा है अनमोल, चलो रघुवर प्यारे कोल।–2
चलो रघुवर प्यारे कोल, चलो रघुवर प्यारे कोल।
ओ हीरा है अनमोल, चलो रघुवर प्यारे कोल।

(ii) अजर अमर अडोल निश्चल, –2
परषोत्तम् अपरापरम् अपरापरम् अपरापरम्।
ओ हीरा है अनमोल, चलो रघुवर प्यारे कोल।।

(iii) शंख चक्र गदा पद्मधारी, –2

हरि ओ३म् नमो नारायण निमश्कारनिंग, निमश्कारनिंग, निमश्कारनिंग।

ओ हीरा है अनमोल, चलो रघुवर प्यारे कोल।।

(iv) मच्छ कच्छ नरसिंह वैराह, –2

पाय रघुपति पावनिंग, पावनिंग ओ पावनिंग।

ओ हीरा है अनमोल, चलो रघुवर प्यारे कोल।।

(v) राम नाम कृष्ण गोपाल,–2

हरि ओ३म् नमो भगवते माधवा आधारनिंग, आधारनिंग, आधारनिंग, ।

ओ हीरा है अनमोल, चलो रघुवर प्यारे कोल।।

(vi) पारब्रह्म परमेश्वर भक्त वत्सल–2

बिन सूरजों चमकारनिंग, चमकारनिंग, चमकारनिंग।

ओ हीरा है अनमोल, चलो रघुवर प्यारे कोल।।

22. कीर्तन नं० 3

(श्री रामचन्द्र जी के मुख के शब्द)।

(i) आओ साजन जी प्यारा है मेरा,–2

आद अन्त तूं जगदा आयों।

सप्तद्वीप प्रकाश है तेरा,

सप्तद्वीप प्रकाश है तेरा ओ तेरा।।

ओ३म् जुग जुगन्तर तूं जगदा आयों।

हर अन्दर प्रकाश है तेरा ओ तेरा।।

आओ साजन जी.........................

(ii) भूलोक भूमंडल अस्थान है तेरा, –2

नौखण्ड ब्रह्माण्ड तूं जगदा आयों।

हर रोशन नाम है तेरा,

हर रोशन नाम है तेरा ओ तेरा।।

ओ३म् जुग जुगन्तर तूं जगदा आयों।
हर अन्दर प्रकाश है तेरा ओ तेरा।।
आओ साजन जी......................

(iii) सर्व मकान प्यारा है मेरा,–2
सर्व सर्व तूं जगदा आयों।
महान विश्व नाम है तेरा,
महान विश्व नाम है तेरा ओ तेरा।।
ओ३म् जुग जुगन्तर तूं जगदा आयों।
हर अन्दर प्रकाश है तेरा ओ तेरा।।
आओ साजन जी...................

(iv) कर्त्ता अकर्त्ता नाम है तेरा, –2
जड़ चेतन तूं जगदा आयों।
चौह कुंडा निवास है तेरा,
चौह कुंडा निवास है तेरा ओ तेरा।
ओ३म् जुग जुगन्तर तूं जगदा आयों,
हर अन्दर प्रकाश है तेरा ओ तेरा।
आओ साजन जी....................

(v) सूक्ष्म स्थूल बसे प्यारा है मेरा,
जुग जुग ते तूं जगदा आयों।
जुग जुगन्तर प्रकाश है तेरा,
जुग जुगन्तर प्रकाश है तेरा ओ तेरा।।
ओ३म् जुग जुगन्तर तूं जगदा आयों,
हर अन्दर प्रकाश है तेरा ओ तेरा।।
आओ साजन जी........................

नोट :–एक दिन (कीर्तन नं0–1) "नी सरस्वती तूं कंचन हो जा.....", और (कीर्तन नं0–3) "आओ साजन जी प्यारा है मेरा......", बोलने हैं। दूसरे दिन (कीर्तन नं0–2) "ओ हीरा है अनमोल....",

और (कीर्तन नं0–3) " आओ साजन जी प्यारा है मेरा.....", बोलने हैं। इस प्रकार हर रोज बारी–बारी से बोलने हैं।

23. **यह सात बार बोलना है**

जो गल बात करनी पहले कर लौ सजनों, फेर बात न करनी जे।
इशारे सजनों मत करना, एहो बात तुसां फड़नी जे।

24. **यह सात बार बोलना है**

(यह शब्द गदे के चालीस दिनों में आये)

रंग ओ इलाही आया, ओ रंग पातशाही आया।
रंग है ओ अजब रंग, ओ रंग रौशनाई आया।।
इस रंग दी महिमा अपर अपार, ओ कोई विरला जाने।
चमके ओ शहर पर शहर, कोई विरला पहचाने।।

25. **ध्वनि :–** संगता चार चुफेर श्री राम जी दियां।
संगता चार चुफेर हनुमान जी दियां।।
संगता चार चुफेर ने संगता चार चुफेर।
संगता चार चुफेर श्री राम जी दियां।
संगता चार चुफेर हनुमान जी दियां।। (7 बार)

26. **शब्द**

गाना है बड़ा महान, गाने दी उच्ची है जे ओ शान।
गाना पवा रहे ने ओ आप भगवान ।। –2
तुसां बालक नहीं नादान, सजनों हो तुसां नौजवान।
सतयुग घर बनाओगे, तदों तुसां गाना पाओगे।
महाराज जी दे वचन करो प्रवान, सजनों हो तुसां इन्सान।
इन्सान हो तो इन्सानी दिखाओगे,
महाराज जी दे वचनां तो न लाहवोगे, तदों तुसां गाना पाओगे।

ध्वनि– गाना अजब दिखाया, गाना महाराज जी ने पाया, गाना अजब दिखाया।
आहा गाना अजब दिखाया, वाह वाह गाना अजब दिखाया।

27. **ध्वनि चुप की**

28. **चुप की ध्वनि के बाद एक ध्वनि बोलनी है**

29. **साडा है सजन राम, राम है कुल जहान।** (सात बार)

30. पहले पूजां महाबीर जी दे चरणां नूं ।
पिच्छे आद गणेश मनावांगी मैं ।
मैं दातार न आखां ते की आखां ।
बक्षन हार न आखां ते की आखां ।
सिरजनहार न आखां ते की आखां ।
सांवले चरणा विच महाबीर जी रैहंदे ने ।
प्यारे चरणां दा रस पये लैंदे ने ।
मैं दातार न आखां ते की आखां ।
बक्षन हार न आखां ते की आखां ।
सिरजनहार न आखां ते की आखां ।

31. कथा आरम्भत होत है, सुनो वीर हनुमान ।
राम ते लक्ष्मण जानकी सदा करो कल्याण।।
सियापति रामचन्द्र जी की जय,
पवन सुत हनुमान जी की जय,
उमापति महादेव जी की जय।

32. जित्थे तुसां शान्ति जानो, ओथे तुसां शक्ति पछानो।
जित्थे तुसां शान्ति जानो, ओथे तुसां पवन पछानो।
ए हैन साडे शक्ति माता, ए हैन त्रिलोकी दे दाता।
संग है जनक जननी, संग है जनक जननी।।
सब कुछ है इन्हां दे कोलों, प्रणाम इन्हां अगों करनी।
प्रणाम इन्हां अगों करनी, प्रणाम इन्हां अगों करनी।
सब कुछ है इन्हां दे कोलों, प्रणाम इन्हां अगों करनी।

33. चरण शरण सजन श्री शहनशाह हनुमान जी दी वन्दना करां बारम्बार
सजन दास सीस धरे चरणां उत्ते सज़न त्रिभुवनपति रघुनाथ।

सजन सियापति रामचन्द्र जी की जय।
सजन पवन सुत हनुमान जी की जय।
सजन उमापति महादेव जी की जय।
बोल सजन श्री कृष्ण बलदेव जी की जय।
बोल शहनशाहे आलम महाराजाधिराज सतवस्तु के वाली श्री साजन जी की जय।

34. धन मेरे सजन श्री शहनशाह हनुमान जी महाराज सच्चे पातशाह जी–2

रामायण का पढ़ना

35. धन मेरे सजन श्री शहनशाह हनुमान जी महाराज सच्चे पातशाह जी –2

ग्रन्थ का पढ़ना

36. सरस्वती कंचन होवे, नाम ते ध्यान होवे।
भक्ति ते शक्ति होवे, प्रेम ते मस्ती होवे।
एहो दिल मंगदा प्रेम ते मस्ती होवे।।
सम होवे सन्तोष होवे, धैर्य ते विचार होवे।
वैराग वाली डोर होवे, सुरत चरणां दे कोल होवे।
एहो दिल मंगदा सुरत चरणां दे कोल होवे।।
रघुवर जी दयाल होवे, नाल बलधार होवे।
हृदय विच उमंग होवे, महाबीर प्यारा संग होवे।।
एहो चढ़या रंग होवे, जगत देख के दंग होवे।
एहो दिल मंगदा जगत देख के दंग होवे।।

37. **प्रार्थना व चरण शरण** (मन में करनी है)

38. **साडा है सजन राम, राम है कुल जहान।** (7 बार)

39. चरण शरण सजन श्री शहनशाह हनुमान जी दी वन्दना करां बारम्बार
सजन दास सीस धरे चरणां उत्ते सजन त्रिभुवनपति रघुनाथ।

40. सजन सियापति रामचन्द्र जी की जय।
सजन पवन सुत हनुमान जी की जय।
सजन उमापति महादेव जी की जय।
बोल सजन श्री कृष्ण बलदेव जी की जय।
बाल शहनशाहे आलम महाराजाधिराज सतवस्तु के वाली श्री साजन जी की जय।

41. कथा समाप्त होत है सुनो वीर हनुमान,
सजन राम ते लक्ष्मण जानकी सदा करो कल्याण।
सियापति रामचन्द्र जी की जय।
पवन सुत हनुमान जी की जय।
सजन उमापति महादेव जी की जय।

42. सजन ऋषि ऋषीश्वर, सजन तपी तपीश्वर, सजन मुनि मुनीश्वर हज़ार।
थक थक के हारे ओ सारे विचारे न पाया किसे अन्त पार।
तेरी कुदरत तो मैं बलिहार, भेद तेरा किसे न पाया है।
तेरी कुदरत तो मैं बलिहार, अन्त तेरा किसे न पाया है।

43. हरे राम, हरे राम, श्री राम, राम हरे हरे।
हरे कृष्ण, हरे कृष्ण, श्री राधा कृष्ण हरे हरे।
हर शरणा, गुरु शरणा, स्वामी शरणा, ब्रह्म महेश।
तुलसी दास रघुवर जी दी शरणा, मेरे काटो नाथ क्लेश।

नोट– चालीसे के चालीस दिनों में हर रोज नये प्रकार का प्रशाद होगा।

44. यज्ञ के पिछले सात दिन हवन की विधि

नोटः– 6 दिन छोटा हवन जैसे मंगलवार करते हैं। यह हवन जगाकर करना है।

1. पिछले सात दिनों मे जो मंगलवार आए उस दिन दो हवन करने हैं। एक गुप्त हवन और एक जगाकर। मंगलवार चालीसा भी पढ़ना है। सातवें दिन जो बड़ा हवन करना है, सात सजन गदे के मंन्दिर के आस–पास बैठकर गुप्त हवन करेंगे। सात सजन जगाकर करेंगे। एक सजन मन्दिर में गानों के ऊपर चंवर झुलाएगा।

2. जिन सजनों ने गाना पहनना हो तो वह सजन हवन के पास बैठकर, हवन की समाप्ति के बाद पहले कच्चा लाल धागे का गाना बंधवाएंगे। कच्चा गाना सात दिनों में किसी भी दिन बंधवा सकते हैं।

45. सातवें दिन का बड़ा हवन

1. पुस्तक उठाने का समय – प्रातः 8 बजे।
2. हवन शुरु होने का समय – प्रातः 9 बजे।

3. गदे के यज्ञ में केवल गेंदे के पीले फूलों का ही प्रयोग करना है। जहाँ गाना विराजमान करना हैं केवल वहाँ गुलाब के फूलों का ही प्रयोग करना है। गाने कांसी की थाली में पूजा के लिये रखने हैं।

4. यज्ञ वाले दिन दो सजन गेट पर खड़े करने हैं जो देखेंगे कि किसी सजन ने पुराना दुपट्टा तो नहीं किया हुआ या किसी ने खंडित गाना तो नहीं पहना हुआ। यदि ऐसा हो तो उस सजन से पैसे लेकर नया दुपट्टा या गाना देवें। वह यह भी देखेंगे कि कोई स्त्री सजन रंगदार कपड़े पहन कर न आवे।

5. गदे के यज्ञ उत्सव वाले दिन सत्संग की आरम्भिक विधि करने के पश्चात् हवन शुरु करना है, जिसकी विधि इस प्रकार है :–

46. प्रार्थना व चरण शरण

47. **पांच जयकारे**

बोल सजन श्री शहनशाह महाबीर बजरंगबली जी की जय।
बोल सजन दयालु श्री रामचन्द्र महाराज जी की जय।
बोल सजन श्री कृष्ण बलदेव जी की जय।
बोल सजन बाबे गुरू नानक देव जी की जय।
बोल शहनशाहे आलम महाराजाधिराज सतवस्तु के वाली श्री साजन जी की जय।

48. **साडा है सजन राम, राम है कुल जहान–** सात बार बोलना।

49. नी मैं धो के पीवां हनुमान जी दे चरण,
धो–धो के पीवां हनुमान जी दे चरण।
हनुमान जी दे चरण, रघुनाथ जी दे चरण,
बलधारी दे चरण गदाधारी दे चरण।।
नी मैं धो के पीवां ....

दाता तेरी शरण प्रीतम तेरी शरण,
साडी भुख त्रेह मिटे नाले मिटे भर्म।
नी मैं धो के पीवां ....

तुहीं तुहीं दाता सब जग माहीं,
साडे हटे संशय, नाले मिटे कर्म।
नी मैं धो के पीवां ....

सब विच व्यापक सबनी थाईं,
दास धारो धर्म पकड़ो सांवले चरण
नी मैं धो के पीवां ....

50. **हवन शुरू** (आहुतियाँ)
सुहंग पवन नन्दनाये नमः– ओ३म् स्वाहा

(i) सीस निवावां, मैं फुल बरसावां, मेहर, मेहर, मेहर कीती महाबीर जी।
(ii) सीस निवावां, मैं फुल बरसावां, मेहर, मेहर, मेहर कीती महाबीर जी।

नोट–सात बार इसी प्रकार बोलना है।

51. हनुमान चालीसा पूरा पढ़कर – ओ३म् स्वाहा की आहुति डालनी है। आहुति के बाद एक नारियल भी डालना है। नारियल घी की आहुति देने वाला सजन डालेगा।

(i) सीस निवावां, मैं फुल बरसावां, मेहर, मेहर, मेहर कीती महाबीर जी।
(ii) सीस निवावां, मैं फुल बरसावां, मेहर, मेहर, मेहर कीती महाबीर जी।

नोट–इसी प्रकार कुल 7 चालीसे पढ़ने हैं। हर चालीसा पढ़ने के बाद दो बार सीस निवावां, मैं फुल बरसावां, मेहर, मेहर, मेहर कीती महाबीर जी बोलना है जैसे की ऊपर लिखा है।

52. **गायत्री मंत्र**

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्। – ओ३म् स्वाहा

(i) सीस निवावां, मैं फुल बरसावां, मेहर, मेहर, मेहर कीती महाबीर जी।
(ii) सीस निवावां, मैं फुल बरसावां, मेहर, मेहर, मेहर कीती महाबीर जी।

नोट–इसी प्रकार 7 बार गायत्री मंत्र पढ़ना है और हर गायत्री मंत्र पढ़ने के बाद ओ३म् स्वाहा की आहुति देते हुए दो बार सीस निवावां, मैं फुल बरसावां, मेहर, मेहर, मेहर कीती महाबीर जी बोलना है।

53. **शान्ति पाठ**

ओ३म द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिब्रह्म शान्ति : सर्व शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।।

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः ओ३म्।

54. **चरण शरण**

चरण शरण सजन श्री शहनशाह हनुमान जी दी वन्दनां करां बारम्बार,
सजन दास सीस धरे चरणां उत्ते सजन त्रिभुवनपति रघुनाथ।

नोट–उसी जगह बैठकर सात फेरे लस्सी के साथ लेने हैं। एक सजन एक फेरा दाँये से घूम कर देगा। लस्सी के फेरों के साथ मन में शब्द चलता रहे।

55. मैं नहीं आहुति, रघुवर जी ने पाई। –2
मैं नहीं आहुति, रघुवर जी ने पाई।
रघुवर जी ने पाई आहुति, सांवले ने पाई।
सांवले ने पाई आहुति, सांवले ने पाई।
त्रिलोकी दे तुसी, आप सहाई।
ए रचना, महाबीर जी रचाई।
दूसरी वस्तु, रहिये न काई।
मैं नहीं आहुति, रघुवर जी ने पाई।।

56. आरती

आरती सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की

(i) जय जय ब्रह्मचारी स्वामी जय जय ब्रह्मचारी।
दासी चरणां तो वारी, वारी ते सदके सारी।
जय जय ब्रह्मचारी ओ३म् जय ब्रह्मचारी।।

(ii) मोर मुकुट मत्थे तिलक विराजे,
सूरत की छवि न्यारी।
स्वामी सूरत की छवि न्यारी।।
शोभा वरनी न जाये –2
जय जय उपकारी, ओ३म् जय ब्रह्मचारी।।
जय जय ब्रह्मचारी..................

(iii) कई जन्मां दी सुती होई दासी नूं,
आन जगाया गदाधारी स्वामी आन जगाया गदाधारी।
चरणा ते शीश निवावां–2
रक्षा करो बलधारी, ओ३म् जय ब्रह्मचारी।
जय जय ब्रह्मचारी..................

(iv) लोभ सतावे कष्ट दिखावे,
हुन कष्ट मिटाया गदाधारी, स्वामी कष्ट मिटाया गदाधारी।।
महाबीर जी दी शरनी आवो –2
मिलासन धनुषधारी, ओ३म् जय ब्रह्मचारी।।
जय जय ब्रह्मचारी.................

(v) मोह माया दी निद्रा विच सोई, सारी उमर बिना नाम दे खोई।
हुन नाम वसाया गदाधारी, स्वामी नाम वसाया गदाधारी।
नाम दा प्याला पिलाओ –2
बन के उपकारी ओ३म् जय ब्रह्मचारी।।
जय जय ब्रह्मचारी...............

(vi) हौं मैं दा रोग सतावे तीनों ताप जलावे,
हुन ताप मिटाया गदाधारी।
स्वामी ताप मिटाया गदाधारी।
तृष्णा दी सर्पणी जलावे – 2
शान्ति बक्षो तेजधारी, ओ३म् जय ब्रह्मचारी।।
जय जय ब्रह्मचारी..................

(vii) लोभ मोह अहंकार सतावे, रघुनाथ जी दा रस्ता भुलावे।।
हुन रस्ता दिखाया गदाधारी स्वामी रस्ता दिखाया गदाधारी।।
पार करो मेरी नैय्या – 2
रघुनाथ जी दे सेवक भारी, ओ३म् जय ब्रह्मचारी।।
जय जय ब्रह्मचारी.................

(viii) संसार समुन्द्र डरावे भरम दिखावे,
हुन निकट दिखाया गदाधारी, स्वामी निकट दिखाया गदाधारी।
दासियां नूं गिरन न देवना, –2
ताकत बक्षो तेजधारी ओ३म् जय ब्रह्मचारी।।
जय जय ब्रह्मचारी..................

(ix) मैं नहीं कोई नज़र न आवे,
नज़र आवे धनुषधारी, स्वामी नज़र आवे धनुषधारी।
स्वास स्वास तुहाडा यश गावां, –2
इक रूप दिखाया गदाधारी, ओ३म् जय ब्रह्मचारी।।
जय जय ब्रह्मचारी..................

(x) मोर मुकुट मत्थे तिलक विराजे, सिंहासन ते सिया रामचन्द्र साजे।
चरणा विच बलधारी, सांवले चरणा विच बलधारी।।
शान्ति दा मार्ग दिखाओ, –2
बन के उपकारी, ओ३म् जय ब्रह्मचारी।।
जय जय ब्रह्मचारी..................

(xi) दासी सीस निवावे, बली ते फुल बरसावे।
हुन मेहर कीती ए गदाधारी, स्वामी मेहर कीती ए गदाधारी–1
चरणां दी दासी हां प्यारी –2
लाज रखो न्यायकारी, ओ३म् जय ब्रह्मचारी।।
जय जय ब्रह्मचारी................

57. आरती

आरती श्री रघुवंश मणि जी की

(सप्तद्वीप के सजन महाराज जी और श्री साजन जी के आगे आरती कर रहे हैं)

(i) सजनों सुनों आरती किवें न करूं। –2
रघुवंश मणि श्री राम रघुराई आरती किवें न करूं।।
आहा श्यामसुन्दर ओ कान्ह कन्हाई, आरती किवें न करूं।।
किवें न करूं, आरती किवें न करूं।।

(ii) आरती करन महाराज जी दे प्यारे, –2
महाराज जी अपने प्यारियां नूं भवसागर पार उतारे।
भवसागर ओ पार उतारे, आरती किवें न करूं,

किवें न करूं, आरती किवें न करूं।
रघुवंश मणि श्री राम रघुराई आरती किवें न करूं।
श्यामसुन्दर ओ कान्ह कन्हाई, आरती किवें न करूं।।

(iii) कई कई महाराज जी दिखा रहे हो नज़ारे –2
महाराज जी तुसां हो भक्तां दे सहारे।
कई प्यारे महाराज जी तुसां ने ओ तारे,
सजनां नूं इक निगाह इक दृष्टि दिखाई, आरती किवें न करूं,
किवें न करूं आरती किवें न करूं।
रघुवंश मणि श्री राम रघुराई आरती किवें न करूं।
श्यामसुन्दर ओ कान्ह कन्हाई, आरती किवें न करूं।।

(iv) ए रचना तुहाडी है सुखदाई –2
महाराज जी असां सजनां ने उच्च पदवी पाई।
विराट नगरी सारी ओहदी है रौशनाई, आरती किवें न करूं।
किवे न करूं आरती किवें न करूं।
रघुवंश मणि श्री राम रघुराई आरती किवें न करूं।
श्यामसुन्दर ओ कान्ह कन्हाई, आरती किवें न करूं।।
सजनों सुनों आरती किवें न करूं।।

नोट – दोनों आरतियां हवन कुंड के पास बैठ कर बोलनी हैं।

58. गदे दी होई ए पूजा, गदे दी होई ए पूजा,
हीरे लाल जवाहरां नाल।
हीरे लाल जवाहरां नाल, हीरे लाल जवाहरां नाल,
हीरे लाल मणियाँ नाल।
गदे दी होई ए पूजा.................................
फुलां दी होई ए वर्षा, फुलां दी होई ए वर्षा,
फुल वर्षण लाल गुलाल।
गदे दी होई ए पूजा.................................

59. चालीसा का पहला दोहा

श्री गुरु चरण सरोज रज, निज मन मुकुर सुधार ।
वरणों रघुवर विमल यश, जो दायक फल चार ।।
बुद्धिहीन तनु जानि के, सिमरो पवन कुमार ।
बल बुद्धि, विद्या देहु मोहे, हरयो क्लेश विकार ।।

60. चरण पकड़ने

पकड़ां महाबीर दे चरण, लगे राम लगन, –2
होवां प्रेम मगन, लगे राम लगन, –2
महाबीर जी दे चरण, साडे मन नूं हरण, –2
राहवां चरणां विच मग्न, लगे राम लगन, –2

बोल सजन सिया पति रामचन्द्र जी की जय

61. फिर यज्ञ की विधि बोलनी है

विधि के बाद नियमानुसार कीर्तन बोलने हैं। यज्ञ में सब सजन गुलानारी रंग के दुपट्टे और स्त्री सजन सफेद वर्दी पहनते हैं। कीर्त्तन के अन्त में पगड़ियाँ बाँध कर यह कीर्तन बोलते हैं:–

महाबीर जी के मुख के शब्द

कलुकाल जब हटने लगा तो,
वह दिन आने वाला साजन जी वह दिन आने वाला।
हो हो हो वह दिन आने वाला साजन जी वह दिन आने वाला।।
रोग सोग जगत तो हटनगे,
होसिया जगत सुखाला साजन जी होसिया जगत सुखाला।
हो हो हो होसिया जगत सुखाला साजन जी होसिया जगत सुखाला।।
निंदिया झूठ दे दो शब्द हटनगे,
होसिया जगत उजियाला साजन जी होसिया जगत उजियाला।
हो हो हो होसिया जगत उजियाला साजन जी होसिया जगत उजियाला।।

सच्चाई धर्म दे दो मंत्र रटनगे।

फिरसिया इको माला साजन जी फिरसिया इको माला।

हो हो हो फिरसिया इको माला साजन जी फिरसिया इको माला।।

भिन्न भेद जगत तो हटनगे,

होसिया प्रेम निराला साजन जी होसिया प्रेम निराला।

हो हो हो होसिया प्रेम निराला साजन जी होसिया प्रेम निराला।।

इको दी रटन सतवस्तु विच करनगे,

श्री विष्णु भगवान हीरे नूं जीव होसिया पछाणन वाला साजन जी होसिया पछाणन वाला।

हो हो हो होसिया पछाणन वाला साजन जी होसिया पछाणन वाला।।

ध्वनि–मैं तूं दे विच फरक मत जानो। अपने ह्रदय विच राम नाम ही मानो।।

आओ मेरा प्यारा श्री भगवान नाम तुम्हारा।

आपे खेल खिलारिया आपे दित्ता समेट।

जीव नूं पता किस तरह लगे एक हो के अनेक।।

62. फिर चुप की ध्वनि लगानी है, फिर बोलकर ध्वनि लगानी है।

63. सात बार, ''**साडा है सजन राम, राम है कुल जहान**'' बोलना है

64. कथा आरम्भत होत है सुनो वीर हनुमान।

श्री राम ते लक्ष्मण जानकी सदा करो कल्याण।।

सजन सियापति रामचन्द्र जी की जय।

सजन पवन सुत हनुमान जी की जय।

सजन उमापति महादेव जी की जय।

बोल सजन श्री कृष्ण बलदेव जी की जय।

बोल शहनशाहे आलम महाराजाधिराज सतवस्तु के वाली श्री साजन जी की जय।

65. जित्थे तुसां शान्ति जानो, ओथे तुसां शक्ति पछानो–2

जित्थे तुसां शान्ति जानो, ओथे तुसां पवन पछानो–2

ए हैन साडी शक्ति माता, ए हैन त्रिलोकी दे दाता–2
संग है जनक जननी, संग है जनक जननी।
सब कुछ है इन्हां दे कोलों, प्रणाम इन्हां अगों करनी।।

66. चरण शरण सजन श्री शहनशाह हनुमान जी दी वन्दना करां बारम्बार सजन दास सीस धरे चरणां उत्ते सजन त्रिभुवनपति रघुनाथ।

सजन सियापति रामचन्द्र जी की जय।
सजन पवन सुत हनुमान जी की जय।
सजन उमा पति महादेव जी की जय।
बोल सजन श्री कृष्ण बलदेव जी की जय।
बोल शहनशाहे आलम महाराजधिराज सतवस्तु के वाली श्री साजन जी की जय।

67. ''धन मेरे सजन श्री शहनशाह हनुमान जी महाराज सच्चे पातशाह जी''

दो बार बोल कर रामायण का पढ़ना।

68. ''धन मेरे सजन श्री शहनशाह हनुमान जी महाराज सच्चे पातशाह जी''

दो बार बोल कर ग्रन्थ का पढ़ना।

69. समाप्ति पर नीचे लिखे वचन बोलने हैं :

सरस्वती कंचन होवे, नाम ते ध्यान होवे
भक्ति ते शक्ति होवे, प्रेम ते मस्ती होवे
एहो दिल मंगदा प्रेम ते मस्ती होवे
सम होवे सन्तोष होवे, धैर्य ते विचार होवे
वैराग वाली डोर होवे, सुरत चरणां दे कोल होवे
एहो दिल मंगदा, सुरत चरणां दे कोल होवे
रघुवर जी दयाल होवे, नाल बलधार होवे
हृदय विच उमंग होवे, महाबीर प्यारा संग होवे
एहो चढ़या रंग होवे, जगत देख के दंग होवे
एहो दिल मंगदा, जगत देख के दंग होवे

70. एक सजन भोग लगाता है

71. 'धर्म दा झण्डा' वाला कीर्तन बोलना है

(i) श्री हनुमान जी महाराज धर्म दा झण्डा झूले।
सुकर्मा दा होवे राज, धर्म दा झण्डा झूले।
हुण ठण्डी आवे हवा, धर्म दा झण्डा झूले।।

(ii) कर्म जावन घर आपने, अधर्म जावन घर आपने।
हुन शास्त्र लिया विचार, हुन रस्ता लिया है संवार।
सुखकारी लिया है संवार।
हुन सच्चे शौह नाल प्यार, धर्म दा झण्डा झूले।।
श्री हनुमान जी महाराज................

(iii) नाम दियां बून्दां बरसन, किणमिण, किणमिण बरसन।
हुन खाक होवे साडी साफ़, हुन बीज बोवो दिन रात।
सुखकारी लिया है संवार।
हुन सच्चे शौह नाल प्यार, धर्म दा झण्डा झूले।।
श्री हनुमान जी महाराज................

(iv) फुव्वारे रिमझिम लावन, अपनी शोभा दिखावन।
सुक्का हरया होवे बाग़, ए उसे दा प्रताप।
सुखकारी लिया है संवार।
हुन सच्चे शौह नाल प्यार, धर्म दा झण्डा झूले।।
श्री हनुमान जी महाराज................

(v) दरखतां दे हुण भाग जागे, सच्चाई दे फल फुल लागे।
लिशकारे मारे बाग़, त्रिलोकी दा चिराग़।
सुखकारी लिया है संवार।
हुन सच्चे शौह नाल प्यार, धर्म दा झण्डा झूले।।
श्री हनुमान जी महाराज................

(vi) मालियां दे माली बाग लाया, बाग दा मालिक देखन आया।
मालियां दे माली दिता ए संवार मालिक देख के होया ए निहाल।
सुखकारी लिया है संवार।
हुन सच्चे शौह नाल प्यार, धर्म दा झण्डा झूले।
धर्म दा झण्डा झूले, धर्म दा झण्डा झूले।
श्री हनुमान जी महाराज, धर्म दा झण्डा झूले।

72. चरण शरण सजन श्री शहनशाह हनुमान जी दी वन्दनां करां बारम्बार सजन दास सीस धरे चरणां उत्ते सजन त्रिभुवनपति रघुनाथ।
सजन सियापति रामचन्द्र जी की जय।
सजन पवन सुत हनुमान जी की जय।
सजन उमापति महादेव जी की जय।
बोल सजन श्री कृष्ण बलदेव जी की जय।
बोल शहनशाहे आलम महाराजाधिराज सतवस्तु के वाली श्री साजन जी की जय।

73. **प्रार्थना** (मन में करनी है)

74. **''साडा है सजन राम, राम है कुल जहान''** सात बार बोलना।

75 कथा समाप्त होता है सुनो वीर हनुमान।
श्री राम ते लक्ष्मण जानकी सदा करो कल्याण।
बोल सजन सिया पति रामचन्द्र जी की जय।

76. सजन ऋषि ऋषीश्वर सजन तपी तपीश्वर
सजन मुनि मुनीश्वर हजार, थक थक के हारे।
ओ सारे विचारे, न पाया किसे अन्त पार।
तेरी कुदरत तों मैं बलिहार, भेद तेरा किसे न पाया ए।
तेरी कुदरत तों मैं बलिहार, अन्त तेरा किसे न पाया ए।
हरे राम, हरे राम, श्री राम राम हरे हरे।
हरे कृष्ण, हरे कृष्ण, श्री राधा कृष्ण हरे हरे।
हर शरणा, गुरु शरणा स्वामी शरणा, ब्रह्म महेश।
तुलसीदास रघुवर जी दी शरणा, मेरे काटो नाथ क्लेश।।